11.07.2020

Dr. Purnima Singh
Department of Political Science
I.A 2nd year, part - 2, Contemporary world politics. Topic - Environment - 2
Lecture-63.

Environment-2

वनों की अन्धाधुन्ध कटाई से हरियाली की मात्रा कम हो रही है तथा कार्बन डाइ ऑक्साइड व क्लोरो फ्लोरो कार्बन की मात्रा में निरन्तर वृद्धि से पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है। इसी को वैश्विक तापवृद्धि (Global warming) या ग्रीन हाउस प्रभाव (Green House effect) कहते हैं। इसी कारण ओजोन परत में छिद्र हो रहे हैं जिससे सूर्य की किरणें पृथ्वी के किसी विशेष भाग पर सीधी मार कर रही हैं। इसे रोकने के लिए यह जरूरी है कि ऐसी गैसों की मात्रा सीमित की जाए। इसी विषय पर 1997 में जापान के नगर क्योटो में सम्मेलन (Kyoto Conference) हुआ जहाँ सभी राष्ट्रों से आग्रह किया गया कि वे धुआँ न छोड़ें, रेफ्रिजरेटरों व एयर कण्डीशनरों का कम प्रयोग करें तथा हरियाली को बढ़ाएँ जो कार्बन डाइ ऑक्साइड को पकड़ लेती है। 1987 में कनाडा के नगर मान्ट्रियाल में 24 देशों ने एक समझौता Montreal Convention किया था लेकिन विश्व के बड़े औद्योगिकृत देश ऐसी सन्धियों को सफलतापूर्वक लागू करना नहीं चाहते।

अतः पर्यावरण को सुरक्षित व प्रदूषण मुक्त रखना अत्यन्त जरूरी है। इसके लिए निम्न उपाय किये जाने चाहिए -

1. विषैली गैसे व कार्बन डाई ऑक्साइड के विसर्जन की मात्रा घटाई जाये, अधिक हरियाली लगाई जाये जो ऐसी गैसो को रोक लेती है।
2. वृक्षो की अंधाधुंध कटाई, विषैली गैसो के उत्सर्जन तथा नदियों में तेजाबी व गन्दा रोक दी जाये क्योकि पेड़ बादलो को आकृष्ट करते है तथा उनकी जड़े पानी को चूसती है जिससे बाढ़ आने की सम्भावनाएं घट जाती है।
3. नदियों मे जहरीला या तेजाबी पानी न छोड़ा जाये क्योंकि इससे पेयजल प्रदूषित होता है तथा मछलियों व कछुओं की हत्या हो जाती है।
4. सभी के जीव - जन्तुओ तथा पेड़ - पौधों को सुरक्षित रखा जाये क्योंकि इसी से प्राकृतिक सन्तुलन बना रह सकता है।
5. सारी दुनिया एक है, यदि प्रलय होती है तो सभी का विनाश होगा, अतः पर्यावरण की सुरक्षा व उसे प्रदूषण से बचाना सभी देशो व सभी लोगो का दायित्व है।

पर्यावरण आन्दोलन (Environmental moments).
1960 के बाद पर्यावरण सम्बन्धी जागृति आई। अनेक देशो मे संगठन बने जिन्होंने परमाणु परीक्षणो नदियों पर बनने वाले बाँधों, वृक्षो की अन्धाधुन्ध कटाई विषैली गैसो के उत्सर्जन तथा नदियों मे तेजाबी व गन्दा पानी छोड़ने जैसे कुकर्मो के खिलाफ आवाज उठाई। 1968 मे <u>गैरेट हार्डिन</u> ने अपने एक लेख मे सांझी त्रासदी (Tragedy of the Commons) का विचार प्रस्तुत किया। विद्वानो के एक समूह (Club of Rome) ने 1972 मे एक पुस्तक (The Limits to Growth) प्रकाशित की जिसमे उन्होने बढ़ती हुई जनसंख्या का पर्यावरण पर कुप्रभाव के तथ्य को उजागर किया। स्टॉकहोम सम्मेलन के बाद ऐसी जागृति मे तेजी आई।

आस्ट्रेलिया में आदिम जातियों ने फ्रैंकलिन नदी पर बनने वाले बाँध का विरोध किया क्योंकि इसके निर्माण में उस पहाड़ी क्षेत्र में वृक्षों की अन्धाधुन्ध कटाई उन लोगों को हानिकार हो सकती थी। फिलीपीन्स में लोगों ने आस्ट्रेलिया की एक कम्पनी (western Mining Corporation) की गतिविधियों को रोकने की माँग उठाई क्योंकि वहाँ के लोग उस कम्पनी द्वारा प्रयुक्त परमाणु शक्ति से आतंकित थे। जर्मनी में एक शक्तिशाली ग्रुप (Greenpeace) बना जिसने अन्य देशों में अपनी शाखाएँ स्थापित की। ऐसे ही संगठनों के उग्र विरोध के कारण नवम्बर 1999 में अमेरिका के नगर सियाटल में विश्व व्यापार संगठन का सम्मेलन स्थगित करना पड़ा।

भारत में ऐसे आन्दोलन शुरू हो गए। उत्तराखंड में सुन्दरलाल बहुगुणा ने 'चिपको आन्दोलन' चलाया ताकि पेड़ों की अन्धाधुन्ध कटाई को रोका जा सके। गाँधीजी की दो शिष्याओं (मीरा बहन व सरला बहन) ने गढ़वाल व अल्मोड़ा में पेड़ों की कटाई की आलोचना की लेकिन श्री देव सुमन ने ऐसा अभियान चलाया जिसे सुन्दरलाल बहुगुणा ने चिपको आन्दोलन का रूप दिया। उन्होंने कहा कि पेड़ों की अन्धाधुन्ध कटाई से वहाँ का पर्यावरणीय सन्तुलन बिगड़ जायेगा। यहाँ गाँधीजी के सत्याग्रह की तकनीक ने एक नया रूप धारण किया। महिलाओं ने पेड़ों को घेर लिया, वे उनसे चिपक गईं, ताकि ठेकेदारों के श्रमिक उनकी कटाई न कर सकें। इस अभियान को सफलता मिली। फिर, बहुगुणा ने टेहरी बाँध के निर्माण का विरोध किया क्योंकि ऊँचाई से गिरने वाला नदी का पानी पृथ्वी को हिलाकर भूचाल की स्थिति पैदा कर देगा।